

## कार्यस्थल पर सुरक्षा

डॉ. अनिला नायर द्वारा

लोग कार्यालयों, कारखानों और अपने घर में काम कर रहे हैं। हालाँकि, कार्यस्थल,

चाहे वह कहीं भी हो,

हमेशा सुरक्षित नहीं होता

है। दुर्घटनाएं हो सकती हैं

जिससे चोट लग सकती है

और मृत्यु हो सकती है।

ILO की रिपोर्ट: "सुरक्षित

और स्वस्थ कार्य

वातावरण 2022 के लिए

एक आह्वान", कार्यस्थल

के खतरों के विभिन्न

पहलुओं और उन श्रमिकों

की श्रेणियों को रेखांकित

करती है जो ऐसे खतरों के



प्रति अधिक संवेदनशील हैं। "आईएलओ द्वारा विकसित और वर्ष 2019 को कवर करने वाले नवीनतम अनुमानों के अनुसार, दुनिया भर में 395 मिलियन से अधिक श्रमिकों को गैर-घातक कार्य चोट का सामना करना पड़ा। इसके अलावा, काम से संबंधित कारकों के परिणामस्वरूप लगभग 2.93 मिलियन श्रमिकों की मृत्यु हो गई, जो कि 2000 की तुलना में 12 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि है। अनुमान से पता चलता है कि लंबे समय तक काम करने का जोखिम, व्यावसायिक कण मामले, गैसों और धुएँ, व्यावसायिक चोटें, एस्बेस्टस का व्यावसायिक जोखिम, सिलिका का व्यावसायिक जोखिम, अस्थिमाजन का व्यावसायिक जोखिम, सौर पराबैंगनी विकिरण (यूवीआर) का व्यावसायिक जोखिम, व्यावसायिक जोखिम डीजल इंजन से निकलने वाला धुआँ, आर्सेनिक का व्यावसायिक जोखिम और निकेल का व्यावसायिक जोखिम प्रमुख खतरे हैं।

ILO ने उन श्रमिकों की श्रेणी पर भी प्रकाश डाला है जो व्यावसायिक खतरों के प्रति अधिक संवेदनशील हैं। इसमें कहा गया है: "लगभग 2 बिलियन लोग अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में काम कर रहे हैं (दुनिया की नियोजित आबादी का 60 प्रतिशत से अधिक) जिनके पास स्थिर या नियमित आय और पर्याप्त कानूनी या सामाजिक सुरक्षा का अभाव है। उनका काम अक्सर व्यावसायिक सुरक्षा और स्वास्थ्य (ओएसएच) कानून और श्रम निरीक्षणालयों के दायरे से बाहर होता है, जिससे वे ओएसएच विनियमन और निरीक्षण के मामले में व्यावहारिक रूप से अदृश्य हो जाते हैं।



घरेलू कामगार, प्लेटफॉर्म कर्मचारी, छोटे और मध्यम आकार के उद्यमों में काम करने वाले श्रमिकों और औपचारिक क्षेत्र के श्रमिकों को स्वास्थ्य संबंधी खतरों का खतरा अधिक होता है।

श्रमिकों को विभिन्न स्वास्थ्य खतरों से बचाने के लिए, निम्नलिखित कदम उपयोगी हो सकते हैं:

- श्रमिकों को उन कार्यों से संबंधित विभिन्न खतरों के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए जिनमें वे लगे हुए हैं या लगाए जाने वाले हैं।
- श्रमिकों को पर्याप्त सुरक्षा गियर उपलब्ध कराए जाने चाहिए।
- एक-साइट चिकित्सा देखभाल प्रदान की जानी चाहिए।
- श्रमिकों को परामर्श देने और उनकी सहायता करने के लिए ट्रेड यूनियनों और नागरिक समाज संगठनों को शामिल किया जाना चाहिए।
- श्रमिकों को उचित तनाव प्रबंधन प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।

### - संपादक - मंडल -

मुख्य संपादक - डॉ. अनिला नायर

### - संपादकीय बोर्ड के सदस्य -

प्रोफेसर जितेंद्र चौधरी

श्री. कैलाश नायर

### - सामग्री की सूची -

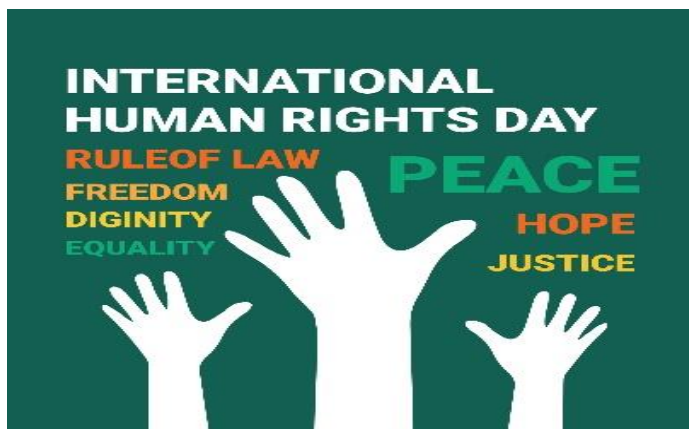
सुरक्षा कार्यस्थल	- 1
स्वतंत्र भाषण और मानवाधिकार	- 2
संकट में जूट किसान	- 3
त्रिनिकेतन गतिविधियाँ	- 3
अनुसंधान और दस्तावेजीकरण गतिविधियाँ	- 4

- पैम्फलेट/ब्रोशर तैयार किए जाने चाहिए और ऐसी सामग्री सरल भाषा और चित्रों के साथ प्रारूप में कार्यकर्ताओं को प्रदान की जानी चाहिए।

### -स्वतंत्र भाषण और मानवाधिकार-

डॉ. अनिला नायर द्वारा

सभी मनुष्यों की सहज इच्छा अपने बारे में और अपने साथी प्राणियों के बारे में अपनी भावनाओं, संवेदनाओं, विचारों, विचारों को संप्रेषित करना है। और ऐसा करने की इच्छा वर्तमान और भविष्य की जरूरतों और अपेक्षाओं दोनों से उत्पन्न होती है। और यह एक अहम जरूरत है।



इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, अनादि काल से, 'स्वतंत्र भाषण' की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए नैतिक सिद्धांतों को विकसित करने का प्रयास किया गया है।

10 दिसंबर, 1948 को मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा ने इसे अनुच्छेद 19 में इस प्रकार संहिताबद्ध किया: "प्रत्येक व्यक्ति को राय और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार है; इस अधिकार में बिना किसी हस्तक्षेप के राय रखने और किसी भी मीडिया के माध्यम से और सीमाओं की परवाह किए बिना जानकारी और विचार मांगने, प्राप्त करने और प्रदान करने की स्वतंत्रता शामिल है।

यह आह्वान क्यों किया गया? यूडीएचआर की प्रस्तावना के दूसरे पैराग्राफ में यह स्पष्ट है: "जबकि मानव अधिकारों की उपेक्षा और अवमानना के परिणामस्वरूप बर्बर कृत्य हुए हैं जिन्होंने मानव जाति के विवेक को अपमानित किया है, और एक ऐसी दुनिया का आगमन हुआ है जिसमें मनुष्य अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का आनंद लेंगे और विश्वास तथा भय और अभाव से मुक्ति को आम लोगों की सर्वोच्च आकांक्षा घोषित किया गया है। इन महत्वपूर्ण और प्रतिष्ठित घोषणाओं को उजागर करने का उद्देश्य हमें इस धरती पर हमारे विकास और शांतिपूर्ण अस्तित्व के लिए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के महत्व की याद दिलाना है। हमारे संविधान ने भी इसी तरह की चिंता व्यक्त की और अनुच्छेद 19(i)(a) में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को मौलिक अधिकार घोषित किया: सभी नागरिकों को यह अधिकार होगा:

- भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए;
- शांतिपूर्वक और बिना हथियारों के इकट्ठा होना;
- संघ और संघ बनाना।

लेकिन सवाल यह है कि क्या अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता या फ्री स्पीच पूर्ण हो सकती है?

नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध (आईसीसीपीआर), एक मील का पत्थर और मौलिक दस्तावेज और संधि सीमाएँ निर्धारित करती है: "अधिकारों का प्रयोग... अपने साथ विशेष कर्तव्य और जिम्मेदारियाँ भी लाता है। इसलिए यह कुछ प्रतिबंधों के अधीन हो सकता है, लेकिन ये केवल वही होंगे जो कानून द्वारा प्रदान किए गए हैं और आवश्यक हैं:

- दूसरों के अधिकारों या प्रतिष्ठा के सम्मान के लिए;
- राष्ट्रीय सुरक्षा या सार्वजनिक व्यवस्था (ऑर्डे पब्लिक) या सार्वजनिक स्वास्थ्य या नैतिकता की सुरक्षा के लिए।

वास्तव में, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पूर्ण नहीं हो सकती। हम जो भी शब्द बोलते हैं और जो भी शब्द हम लिखते हैं वे जीवित इकाई हैं। यह किसी भी स्थिति को बना या बिगाड़ सकता है। अगला महत्वपूर्ण प्रश्न यह है: हमारी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रयोग करने के लिए कौन से विचार हमें मार्गदर्शन करने चाहिए?

हमारे संविधान की प्रस्तावना में एक व्यापक दिशानिर्देश प्रदान किया गया है:

- "न्याय, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक;
- विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, विश्वास और पूजा की स्वतंत्रता;
- अवसर की स्थिति की समानता; और उन सब के बीच प्रचार करना;
- व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता को सुनिश्चित करने वाली बंधुता।"

ये अनिवार्य सिद्धांत हैं और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रयोग करते समय इन्हें ध्यान में रखा जाना चाहिए।

इसके अलावा, इसका अभ्यास करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए:



- सबसे पहले, जानें कि आप किसके साथ संवाद कर रहे हैं;
- आप क्या संवाद करने जा रहे हैं;
- आप कब संवाद करने जा रहे हैं;
- आप कहां संवाद करने जा रहे हैं;
- आप कैसे संवाद करेंगे।

मुक्त भाषण का अभ्यास करने की एक और कला हमारी भावनात्मक बुद्धिमत्ता द्वारा निर्देशित होती है जिसका अर्थ है हमारी भावनाओं के साथ-साथ हमारे हमवतन को समझने, प्रबंधित करने और संवाद करने की क्षमता।

आत्म-जागरूकता, आत्म-प्रबंधन, सामाजिक जागरूकता, संबंध प्रबंधन और सहानुभूति जैसे पांच घटकों में से, सहानुभूति महत्वपूर्ण है।

**और सहानुभूति का अर्थ है:**

दूसरे की आँखों से देखना  
दूसरे के दिल से महसूस करना  
दूसरे के कान से सुनना

- अनाम डेमिस कवि

मीठे शब्द उपचार करने वाली जड़ी-बूटियों के समान हैं, कठोर शब्द तीर के समान हैं जो कानों के द्वार से प्रवेश करते हैं और पूरे शरीर को प्रभावित करते हैं।

- कबीर

ओसर्वे भबथु सुखिना: सर्वे सन्तु निरामय!

सभी संत शांति से रहें, कोई भी बीमारी से पीड़ित न हो।

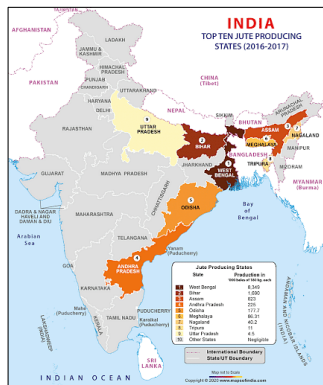
- गरुड़पुराण

**-देश साइट से समाचार-**

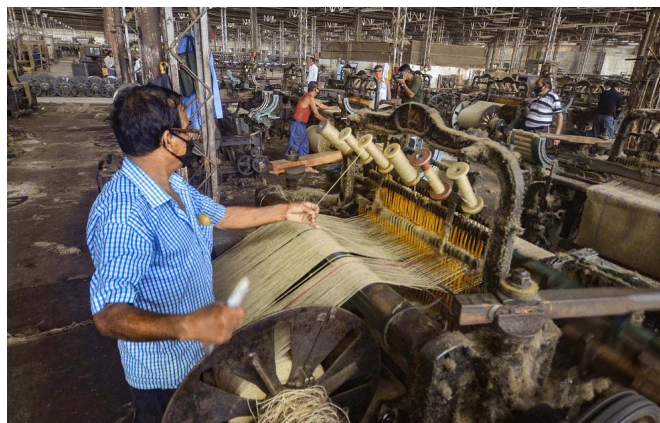
**-जूट किसान संकट में-**

जूट एक महत्वपूर्ण नकदी फसल है, जिसकी खेती भारत के विभिन्न राज्यों, अर्थात् पश्चिम बंगाल, बिहार, ओडिशा, असम, मेघालय, त्रिपुरा, नागालैंड, झारखंड, उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश में की जाती है। जूट के कई उपयोग हैं, जैसे बोरियां, मोटे कपड़े, बैग, पर्दे, फर्नीचर कवर्निंग, कालीन, गलीचे, रस्सी आदि बनाना। इसकी पत्तियों का उपयोग व्यंजनों के रूप में भी किया जाता है।

इसकी उपयोगिता के बावजूद, जूट किसान गंभीर संकट में हैं, क्योंकि इस वर्ष जूट का बाजार मूल्य बहुत कम है। यह वर्ष जूट किसानों के लिए भी कठिन वर्ष है, क्योंकि जूट की रीटिंग के लिए पानी की आवश्यकता होती है। लेकिन सूखे जैसी स्थिति के कारण, तालाबों, टैंकों और अन्य जल निकायों में जूट की खेती के लिए पर्याप्त पानी नहीं था। परिणामस्वरूप, जूट किसानों को अपने तालाबों को रेत जूट के पानी से सींचना पड़ा। और इससे कटाई के बाद की गतिविधियों की उनकी लागत बढ़ गई।



करने वालों को कई अन्य समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है जैसे:



- रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, शाकनाशियों की बढ़ती लागत के कारण खेती की लागत बढ़ती जा रही है।
- जूट की खेती अत्यधिक श्रम गहन होने के कारण श्रम लागत भी बढ़ गई है।
- जूट के पौधे कीटों से प्रभावित होते हैं जिन्हें बहुत अधिक सुरक्षा की आवश्यकता होती है।
- अंततः, जूट की कीमतें बहुत अस्थिर हैं।

इसे ध्यान में रखते हुए, जूट की खेती करने वालों को या तो बाजार में जूट की कीमतें बढ़ाकर या इनपुट लागत पर सब्सिडी देकर संरक्षित करना होगा।

## - त्रिनिकेतन गतिविधियाँ -

- त्रिनिकेतन ने जरूरतमंदों को गर्म कपड़े वितरित करने के प्रयास में एक गैर सरकारी संगठन को योगदान दिया।
- त्रिनिकेतन ने तीन प्रतिभागियों को नामांकित किया, अर्थात्:
  - सुश्री ममता कश्यप
  - सुश्री राजकुमारी
  - सुश्री स्वाति

एक प्रशिक्षण कार्यक्रम जिसका शीर्षक है: 20-24 नवंबर, 2023 के दौरान वी.वी. में लिंग: श्रम संहिता और अंतर्राष्ट्रीय श्रम मानकों पर उभरते परिप्रेक्ष्य पर प्रशिक्षण कार्यक्रम। गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नोएडा, उ.प्र.





- त्रिनिकेतन लगातार गांव भूपनगर, झांसी, यूपी के संपर्क में है। और ग्राम विकास से संबंधित सामग्री साझा करना।
- 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को सूचीबद्ध कर आगे की शिक्षा प्राप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। इसका उद्देश्य उन्हें कॉलेजों में प्रवेश पाने में मदद करना है।



- केरल के भारतीय मलयालम भाषा के नाटककार, उपन्यासकार और कवि प्रोफेसर ओमचेरी एन.एन. पिल्लई से मिलें। प्रोफेसर पिल्लई ने 80 से अधिक एकांकी नाटकों और कुछ उपन्यासों के साथ नौ पूर्ण लंबाई के नाटक भी लिखे हैं।

केरल के श्री सुधाकरन, एक थिएटर अनुभवी, प्रोफेसर ओमचेरी एन.एन. पिल्लई से मिले और थिएटर की प्रकृति और चरित्र और समाज पर इसके प्रभाव के बारे में कई विचारों का आदान-प्रदान किया। डॉ. अनिला नायर भी मौजूद रहीं।

#### - अनुसंधान और दस्तावेजीकरण गतिविधियाँ -

- त्रिनिकेतन ने विभिन्न विषयों पर अनुसंधान परियोजनाएं शुरू की हैं।
- सामाजिक सुरक्षा एवं विकास कार्यक्रम पर एक संक्षिप्त दस्तावेज तैयार करना।

#### - हम से कैसे संपर्क करें -

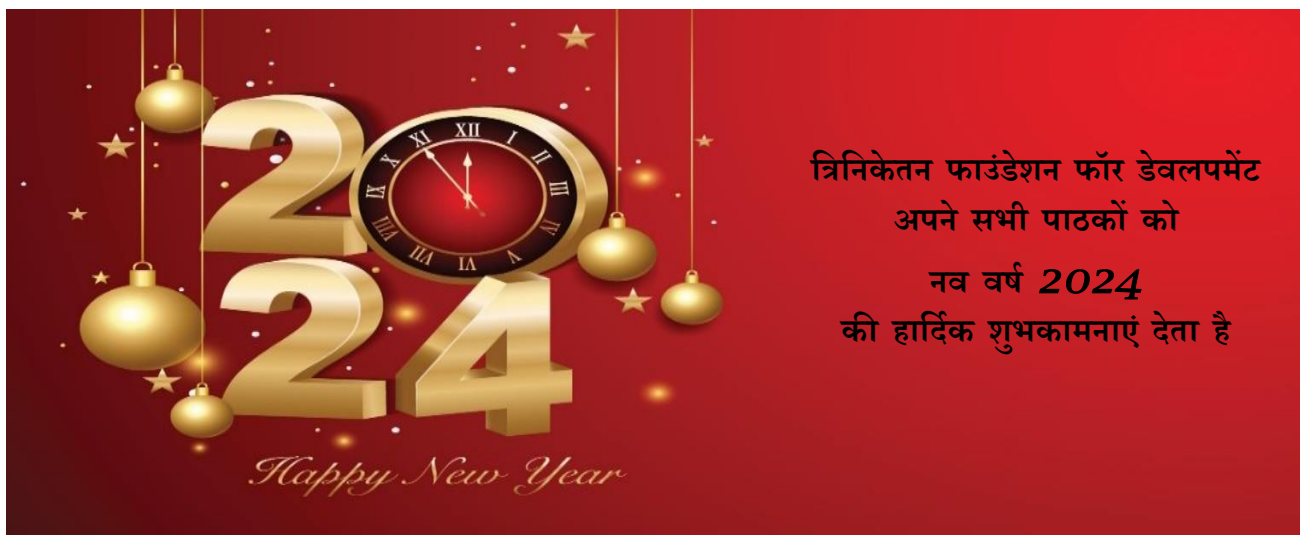
☎ 011-96676 4895  
✉ [triniketanfoundation2018@gmail.com](mailto:triniketanfoundation2018@gmail.com)  
🌐 [www.triniketanfoundation.org](http://www.triniketanfoundation.org)



#### TRINIKETAN FOUNDATION FOR

MID : 037213000071953 IID : 13771917  
ME Helpdesk: 18602332332 / 022-40426060

हमारे बैंक खातों का विवरण इस प्रकार है:  
एक्सिस बैंक लिमिटेड, आर.के. पुरम शाखा, मुनिरका,  
नई दिल्ली-110067, बचत बैंक खाता संख्या



त्रिनिकेतन फाउंडेशन फॉर डेवलपमेंट  
अपने सभी पाठकों को  
नव वर्ष 2024  
की हार्दिक शुभकामनाएं देता है